[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3599

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

जैन धर्म में रंगो की दार्शनिक भूमिका

डॉ. जया जैन
प्राध्यापक चित्रकला, के.आर.जी. कॉलेज, ग्वालियर (म.प्र.)

रंगो का अपना अनूठा संसार अपनी भाषा होती है। 'रंग' शब्दों, वस्तुओ को अर्थ प्रदान कर उन्हे प्रतिबिम्बित करते है। रंगो के द्वारा ही वस्तु, शब्दों के गुण व भावों को आसानी से समझा जा सकता है। रंग अपने आप में अनेक अर्थो को समाये रहता है। रंगों के अभाव में चित्रकला का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। भावों को व्यक्त करने का रंग महत्वपूर्ण साधन है। मूर्तिकला में भी प्रस्तर वर्ण का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है।धार्मिक क्षेत्र भी रंगो की प्रतीकात्मकता से अछूता न रह सका। जैन धर्म में दार्शनिक भावनाओं को रंगो की प्रतीकात्मकता द्वारा भी व्यक्त किया है। रंग अनेक भावनाओं का अनूठा पुंज है। जैन धर्म में पांच रंगों की ही प्रधानता रही है। श्वेत, लाल, पीला, नीला या हरा, काला। लाल, नीला और पीला ये तीन प्रधान रंग भी है। इन्हीं के भिन्न–भिन्न अनुपातिक मिश्रण से अन्य रंग बनते है। इन रंगो का सुख, समृद्धि और चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्रमुख स्थान है।

'विष्णु धर्मोत्तर पुराण के चित्र सूत्र में भी श्वेत, लाल, पीला, नीला व काला पाँच प्रकार के प्रमुख रंग बतायें है। पंचपरमेष्ठी वर्ण, तीर्थकर वर्ण, षट्लेश्या व ध्वज के वर्ण में इन्ही पाँच रंगो की महत्वता है। इन पांचो रंगो का हमारे आन्तरिक एवं बाह्य विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

महामंत्र णमोकार वर्ण (पंचपरमेष्ठी वर्ण) : **णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।**
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

जैन धर्म का मूल मंत्र णमोकार मंत्र समस्त मंत्रो का मूल है। सम्पूर्ण जैन दर्शन णमोकार महामंत्र में प्रतिबिम्बित होता है महामंत्र णमोकार समस्त वर्णो का प्रतिनिधि मंत्र यह भी है। महामंत्र णमोकार के पाँचों पदों में पाँच प्रतिनिधि रंग अर्न्तनिहित है। प्रत्येक वर्ण मंत्र में एक निश्चित स्थान पर एक निश्चित शक्ति के रूप में विद्यमान है। पंचपरमेष्ठी के पाँच रंग श्वेत, लाल, पीला, नीला व काला शाक्ति के प्रतीक बनकर व्यक्ति को आत्मोपलब्धि की दिशा में प्रवृत्त करते रहते है। रंग के स्तर पर पंचपरमेष्ठी की प्रतीकात्मकता को समझा जा सकता है। पंचपरमेष्ठियों का एक सुनिश्चित प्रतीक रंग है। अरिहंत परमेष्ठी का श्वेत रंग, सिद्ध परमेष्ठी का लाल रंग, आचार्य परमेष्ठी का पीला रंग, उपाध्याय परमेष्ठी का नीला रंग तथा साधु परमेष्ठी का काला रंग। पंचपरमेष्ठी वर्ण मान्यता अति प्राचीन काल से चली आ रही है।महामंत्र णमोकार में पांचो पदों के रंगो से जब मानव जुड़ते हैं तब मनुष्य के विभिन्न चैतन्य केन्द्र में ऊर्जा का संचार हो जाता है। पंचपरमेष्ठी के प्रतीकात्मक रंगो का क्रमशः ज्ञान, दर्शन, विशुद्धि, आनंद और शक्ति के केन्द्रों के रूप में स्वीकृत किया गया है। जो पवित्रता, तेज, दृढ़ता, व्यापक मनीषा एवं सतत् मुक्ति संघर्ष कें प्रतीक है।

रंग–विज्ञान का भी एक विशिष्ट एवं व्यापक धरातल है। रंगो का सन्तुलन और संयोजन भी हमारे शरीर में है। शरीर में रंगो के संतुलन पर हमारा स्वास्थ्य निर्भर करता है। हमारे शरीर में णमोकार मंत्र के पाँचों पदों की आराधना से रंगों का सन्तुलन होने के साथ निर्मलीकरण तो होता ही है तथा विकृतियाँ भी दूर हो जाती हैं। रंगो की शुद्धि होने से शांति का अनुभव होता है। मंत्रो में पांच रंगो का विशेष महत्व है क्योंकि इनके द्वारा एकाग्रता, ध्यान, समाधि और आत्मोपलब्धि की ऊँचाई तक पहुंचने में सहायता मिलती है।[1]

अरिहंत परमेष्ठी वर्ण :– णमोकार मंत्र का प्रथम पद णमो अरिहंताण में अरिहंतो को नमस्कार किया जाता है। अरिहंत आध्यात्मिकता का सर्वोच्च स्वरूप और पवित्र रूप है। अरिहंत परमेष्ठी के गुणों का प्रतीक है श्वेत रंग । 'णमो अरिहंताणं पद के उच्चारण के साथ श्वेताभा प्रस्फुटित होने लगती है। जिससे हमारे ज्ञान केन्द्र की ऊर्जा में सक्रियता आने लगती है इसका मस्तिष्क से संबंध है। श्वेत रंग पवित्रता का प्रतीक है। ज्ञान का वर्ण है। अरिहंत के गुणों की निर्मलता, पवित्रता का आभास हमें श्वेत रंग में होने लगता है। अरिहंत सर्वज्ञ के ज्ञाता हैं, श्वेत रंग अरिहंत की सर्वज्ञता को प्रतिबिम्बत करता है।

श्वेत रंग की कमी अस्वास्थ्य को बढाती है। णमो अरिहंताणं के जाप से श्वेत रंग की पूर्ति हो जाती है। णमो अरिहंताणं पद का श्वेत रंग रोगों से बचाता है और पाचन शक्ति को ठीक करता है। मानसिक निर्मलता और संरक्षण शक्ति भी अरिहंत परमेष्ठी के श्वेत वर्ण से प्राप्त होती है।श्वेत रंग मौलिक रंग नहीं है। सात मौलिक रंगो के आनुपातिक मिश्रण से बनता है। श्वेत रंग की भांति अरिहंत परमेष्ठी मे ही सभी परमेष्ठी गर्भित हैं। चित्त में अरिहंत परमेष्ठी की श्वेताभा के प्रस्फुटित होते ही अन्य चार

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

परमेष्ठियों की वर्णाभा को प्राप्त करना अत्यन्त सहज हो जाता है।[2] श्वेत वर्ण सब वर्णो का प्रतिनिधित्व करता है। अतः णमो अरिहंताणं की ध्वनि तरंग से आध्यात्मिक निर्मलता आती है। श्वेताभा के दर्शन होने लगते है। अमृत तत्व का संचार होने लगता है।शांति का अनुभव होता है। श्वेत रंग पवित्रता व एकाग्रता बढ़ता है।

सिद्ध परमेष्ठी वर्ण :– सिद्ध परमेष्ठी को नमन आत्मा की पूर्ण विद्वता को नमन है। यह णमोकारमंत्र का दूसरा पद है जिसमें सिद्धों को नमन किया जाता है।[3] सिद्ध परमेष्ठी के नमन व ध्यान के समय हम लाल रंग से सहज ही जुड़ जाते हैं। सिद्ध परमेष्ठी जिनका वर्ण तप्त के समान लाल है जो आत्मा के अष्ट गुणों की पूर्णता से युक्त, कृतकृत्य सिद्ध शिखर के अधिकारी हैं व अष्टकर्मो का दहन कर निर्मल रक्तवर्ण कुन्दन की भांति दैदीप्यमान है। णमो सिद्धाणं का ध्यान दर्शन केन्द्र में लाल वर्ण के साथ किया जाता है। दर्शन केन्द्र महत्वपूर्ण चैतन्य केन्द्र है। लाल वर्ण हमारी आन्तरिक दृष्टि को जागृत करने वाला है।[4] पिच्यूटरी ग्लैंड से इसका संबंध है, यह सक्रियता प्रदान करता है व हार्मोन्स को नियंत्रित करता है। यह अतीन्द्रियता की ओर ले जाने वाला रंग है।[5] लाल रंग का मनुष्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है, तीव्र भावनाओं का स्पष्टीकरण लाल रंग के माध्यम से ही सम्भव होता है। लाल रंग दहकता का द्योतक है। यह शक्ति का प्रतीक है। पूर्व दिशा में उदित होने वाला बाल सूर्य सदृश यह स्फूर्ति, जाग्रति, उत्साह, उल्लास को बढ़ाता है।स्वास्थ का द्योतक है। तीन मूल रंगों लाल, नीले, पीले में भी लाल रंग की प्रमुखता है। वही ऊष्मा और जीवन का रंग है। शक्ति, क्रिया और गति का पोषक है, नियंत्रण शक्ति को बढ़ाता है। निर्विकार और परमशांत अवस्था को प्राप्त करने के लिए 'णमो सिद्धाणं' में लाल रंग के साथ ध्यान एवं जाप अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

आचार्य परमेष्ठी वर्ण :–महामंत्र णमोकार का तीसरा पद 'णमो आइरियाणं 'में आचार्य परमेष्ठी को नमस्कार किया जाता है।आचार्य परमेष्ठी स्वर्ण के समान निर्मल, दीप ज्योति के समान ज्योतिर्मय है। पीला रंग आचार्य परमेष्ठी की प्रतीकात्मकता को प्रतिबिम्बित करता है। आचार्य परमेष्ठी का पीला रंग मन को सक्रियता प्रदान करता है व पवित्रता को संबद्ध करता है।[6] यह रंग जीवन की पुष्टि और शुद्धता का द्योतक है। आचार्य स्वयं के आचरण में ज्ञान को परीक्षित एवं पवित्र करके ही प्रणियों में स्थायी आध्यात्मिक गुणों का संचार करते हैं। णमो आइरियाणं का संबंद्ध विशिुद्धि केन्द्र से है। यह थायरारॉयड ग्लैंडस् को नियंत्रित करता है। पृथ्वी तत्व का पीला रंग शरीर में व्याप्त है। इसकी कमी से रूग्णता आती है ज्ञान तन्तु कमजोर पड़ते हैं। उनमें निष्क्रियता आने लगती है। हमारी चारित्रिक एवं ज्ञानात्मक दृढ़ता घटती है। णमो आइरियाणं पद का ध्यान स्वर्ण जैसे पीले रंग के साथ करने पर शरीर में पीले रंग की पूर्ति होती है, ओज, तेज प्रभाव की वृद्धि होती है। यह रंग ज्ञान शक्ति को विकसित करता है। संयम व आत्मबल वर्धक रंग है। आचार्य परमेष्ठी दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप और वीर्य इन पाँच आचारों का पालन करते है और संघ के सभी साधुओं को भी उक्त आचरण में लीन रख प्रकाशमान करते हैं।[7] आचार्य परमेष्ठी का पीला रंग ज्योति का द्योतक है। इससे पवित्रता, धार्मिकता, बुद्धिमत्ता का बोध होता है।

उपाध्याय परमेष्ठी वर्ण :– महामंत्र णमोकार का चौथा पद 'णमो उवज्झायाणं' में उपाध्याय परमेष्ठी को नमस्कार किया जाता है। उपाध्याय परमेष्ठी नमन करते समय हमारा ध्यान आनंद केन्द्र पर जाता है जिसका नीला रंग है। उपाध्याय परमेष्ठी वाचक नीला रंग शांति प्रदान करने वाला रंग है। कषायों को शांत करने वाला और आत्मसाक्षात्कार को सहज व शांति प्रदान करने वाला है। शरीर में नीले रंग की कमी का परिणाम क्रोध है। जिसे उपाध्याय परमेष्ठी का नीला रंग दूर करता है, हृदय, फेफड़े व पसलियों के लिए भी नीला रंग लाभकारी है। उच्चस्तरीय ज्ञान और चिंतन की कमी को भी दूर करता है।[8] मानसिक रूग्णता में भी यह रंग कार्यकर है। उपाध्याय परमेष्ठी ही श्रुतज्ञान के अधिष्ठाता होने के साथ–साथ व्याख्या और विवेचन की प्रतिभा से समलंकृत होते है। श्रुतज्ञान को ज्ञान का जनक कहा जाता है। नीला रंग ज्ञान ज्योति को प्रकाशमान करता है। यह रंग एकाग्रता में सहायक होता है। सत्यता, स्थिरता, दृढ़ता को प्रकट करता है, यह शीतल प्रकृति का रंग है। अतः उपाध्याय परमेष्ठी में नीले रंग का ध्यान व जाप एकाग्रता से करने पर शांति एवं समन्वय को प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान एवं विद्या की प्राप्ति में भी नीला रंग सहायक होता है।

साधु परमेष्ठी वर्ण :– पांचवा पद 'णमो लोए सव्वसाहूणं' में लोक में विद्यमान समस्त साधुओं को नमस्कार किया गया है। साधु परमेष्ठी का ध्यान करते समय हमारा ध्यान शक्ति केन्द्र पर जाता है। जिसका काला रंग है। साधु परमेष्ठी का काला रंग माना गया है। यह रंग अवशोषक है। बाहर के प्रभाव को अन्दर नहीं जाने देता है।[9] साधु परमेष्ठी अन्तःबाह्य परग्रिह को त्यागकर शुद्ध मन से मुनिधर्म को अंगीकार करके ही साधु बनते हैं। काला रंग साधु परमेष्ठी के गुणों को प्रकट करता है। काला रंग मूल रंग नहीं है अनेक रंगों के मिश्रण से बनता है। यह रंग हमारी कर्मो के विरूद्ध संघर्षशीलता को बढ़ाता है। साधु कठोर आत्मसाधना, तप, त्याग के प्रतीक है जिसे काला रंग प्रतिबिम्बित करता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

शरीर में काले रंग की कमी के कारण प्रतिरोध शक्ति में कमी आ जाती है। इस कमी को काले रंग के साथ साधु परमेष्ठी का ध्यान करने से पूरी की जा सकती है। यहाँ रंग बाहरी दुर्भावों का रोगों का अवरोधक है। सहिष्णुता को बढ़ाता है। शरीर की निष्क्रियता और अकर्मण्यता को दूर करता है। कर्म दमन और संघर्ष शक्ति इस काले रंग में प्रकट होती है। साधु परमेष्ठी अनथक संघर्ष के प्रतीक है। अतः दृढ़ता के द्योतक काले रंग के साथ साधु परमेष्ठी का ध्यान करते समय हमारे मन में धैर्य, क्षमा, सहिष्णुता, करूणा आदि भावों का संचार सहजता से होने लगता है। पंचपरमेष्ठी के इन पाँच वर्णो में श्याम से श्वेत बनने की भव्य आध्यात्मिक यात्रा के दर्शन होते है । इस विराट यात्रा में संपूर्ण जैन धर्म प्रतिबिम्बित होता है। रंगो का महामंत्र णमोकार से घनिष्ठ संबंध है। मुनियों, आचार्यों ने वैज्ञानिक आधार पर इन्हें संयोजित किया है, उनका शोधन किया है। ध्यान मनन, समाधि के माध्यम से विशिष्ट पद में निहित रंगों का अनुसंधान किया जाता है जो मौलिक होने के साथ प्रेरक हैं, मान्य भी हैं।[10]शरीर में नाना प्रकार की शक्तियां है जो सुषुप्तावस्था में पड़ी रहती है, जिन्हें नाना विधियों से सक्रिय करना संभव है। शरीर में श्वेत, रक्त, पीत, नील व श्याम रंग कहीं न कहीं संयोजित है। यह रंग हमारे शरीर एवं मन के संचारक है व नियंत्रक तत्व हैं इनके माध्यम से ही हमारी आध्यात्मिक यात्रा सहज ही सफल हो सकती है[11]
विभिन्न जैन मंदिरों में भी महामंत्र णमोकार का पंच वर्णों के साथ अंकन देखने को मिलता है जिसका अपना विशेष महत्व है। स्थापत्य एवं मूर्तिकला के सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'मानसार' (5 वीं सदी में रचित) के अध्याय 55 में पाँचों परमेष्ठियों के पंच वर्णों का निरूपण किया गया है।[12]पंच परमेष्ठी पांच रंग को ही जैन धर्म के ध्वज मे पंच परमेष्ठी के प्रतीक स्वरूप दर्शाया है। ये वर्ण निहित शक्ति के द्योतक है।

जैन ध्वज पंच वर्ण:– ध्वज सार्वभौमिकता का प्रतीक है। जिन शासन, सार्वभोम महामंत्र णमोकार व अनेकांत, अहिंसावाद के प्रतिनिष्ठा को प्रतिबिम्बित करता है 'पंच वर्ण ध्वज'। यह ध्वज गति का सूचक व जीवन चेतना का प्रतीक है। जैन ध्वज मूलतः पंच परमेष्ठी का द्योतक है अर्थात् अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं सर्वसाधू।जैन शासन के पंचवर्णी ध्वज के संबंध में विचार–विनिमय मार्च 1961 में विश्व प्रेरक मुनिश्री विद्यानन्द जी, मुनिश्री कांतिसागर जी, विश्व धर्म सम्मेलन संयोजक मुनिश्री सुशीलकुमार, अणुव्रत प्रचारक मुनिश्री महेन्द्र जी चारों सम्प्रदायों के मुनिराजों ने पांच रंग के ध्वज का सर्वसम्मति से अनुमोदन कर धार्मिक तथा ऐतिहासिक प्रमाणिकता के आधार पर निर्णय लिया था।जैन ध्वज पंच वर्ण का होता है, जिसमें क्रमानुसार लाल, पीला, श्वेत, हरा या गहरा नीला, काला रंग होता है। सभी रंग बराबर की चौड़ाई के होते हैं। पूरे ध्वज की चौड़ाई लम्बाई से दो तिहाई होती है। बीच में श्वेत पट्टी पर स्वर्णिम रंग के स्वस्तिक के ऊपर तीन बिन्दु होते है, जिन पर चन्द्रमा एंव एक बिन्दु अंकित होता है। श्वेत पट्टी थोड़ी अधिक चौड़ी होती है।[13]

लाल रंग :– 'सिद्ध' परमेष्ठी का प्रतीक है, पूर्ण शक्ति का द्योतक है एवं ऊर्जा का स्त्रोत है। यह सत्य का बोधक व मोक्ष को प्राप्त करता है। इसलिए ध्वज में इस लाल रंग को सबसे ऊपर रखा गया है।[14] यह अघाति कर्म की निर्जरा का प्रतीक है।
पीला रंग :– यह आचार्य परमेष्ठी का प्रतीक है। सद्भाव एवं आचार को प्रतिबिम्बित करता है। इसलिए ध्वज में पीले रंग को सिद्ध के लाल रंग के बाद रखा गया है। यह रंग शिष्यों के प्रति वात्सल्य का भी प्रतीक है।[15]
स्फटिक (श्वेत रंग) :– 'अरिहंन्त' परमेष्ठी का प्रतीक है 'स्फटिक श्वेत रंग'। श्वेत रंग अंहिसा विश्व शांति का प्रतीक है। ज्ञानवर्णी, दर्शनावर्णी, मोहनीय एवं अंतराय कर्मों का नाश कर जो केवलज्ञान को प्राप्त करता है उनका जीवन स्फटिक के समान धवल हो जाता है। इसी उज्जवलता का द्योतक है श्वेत रंग। पंचपरमेष्ठी में अरिहंत परमेष्ठी का पद प्रमुख है अतः श्वेत रंग को ध्वज के मध्य में रखा जाता हैं।श्वेत रंग के बीच में स्वर्णिम रंग का स्वास्तिक बनाया जाता है। यह मनुष्य की चारों गति का द्योतक है।
हरा रंग :– यह रंग 'उपाध्याय' परमेष्ठी की प्रतीकात्मकता को दर्शाता है। जिस प्रकार सागर गहरा एवं गंभीर होता है व उसमें अनेक रत्न समाहित रहते है उसी प्रकार उपाध्याय परमेष्ठी में ज्ञान रूपी रत्न का अथाह भंडार है। उनकी तुलना समुद्र से की गई है। इसलिए कहीं–कहीं नीले रंग का भी प्रयोग किया जाता है। यह रंग प्रेम, विश्वास व उन्नति का प्रतीक है।[16]
काला रंग :– यह रंग सर्वसाधु परमेष्ठी का प्रतीक है। साधुगण अपनी साधना द्वारा अपने को इस प्रकार एकाग्र कर लेते है कि उन पर किसी भी प्रकार की बाह्म प्रतिबिम्बित करता है। यह रंग अपरिग्रह, समभाव का प्रतीक है।यह पंचवर्णी ध्वज पंचपरमेष्ठी का प्रतीक तो है ही साथ ही, इसे पंच अणुव्रत एवं पंच महाव्रत का भी प्रतीक माना जा सकता है। पंच अणुव्रत श्रावकों के व्रत नियम है व पंच महाव्रत श्रमणों के नियम है। जैन ध्वज जैन संस्कृति का द्योतक है एवं समस्त जैन अनुयायियों के लिए वन्दनीय है विभिन्न धार्मिक उत्सवों, पंच कल्याण महोत्सवों, जिनेन्द्र भगवान की रथयात्राओं व जैन मंदिरों के ऊपर यह पंचवर्णी ध्वज उसकी गरिमा व महत्व को प्रदर्शित करते है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चौबीस तीर्थंकर वर्ण:– जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकर होते है जो धर्म का प्रर्वतन करते है। अनन्तज्ञान दर्शन रूप दीपक से त्रिभुवन को प्रकाशित करने वाले चौबीस तीर्थंकरों के वर्णों का उल्लेख भी हमें शास्त्रों में मिलता है। यह वर्ण निहित शक्ति के द्योतक हैं। चौबीस तीर्थंकरों के वर्ण स्वरूप यह दोहा प्रसिद्ध है :–

दो गोरे, दो सांवले, दो हरियल, दो लाल।
सोलह कंचन वर्ण वंदों आठों धाम।।

– अर्थात् दो श्वेत रंग के होते है, दो श्याम रंग के, दो हरे रंग के है, दो लाल रंग के व सोलह तीर्थंकरों का रंग तपते स्वर्ण के समान है।

भगवान चन्द्रप्रभु और पुष्पदंत चन्द्रमा व बर्फ के सदृश घवल वर्ण के थे। सुपार्श्वनाथ और पार्श्वनाथ भगवान नीलवर्ण के थे। मुनि सुव्रतनाथ और नेमिनाथ भगवान जलयुक्त मेघ के सदृश श्याम वर्ण के थे।[17] पद्मप्रभु और वासुपूज्य भगवान का वर्ण बन्धूक पुष्प वर्ण जैसा अर्थात् लाल वर्ण जैसा था तथा ऋषभनाथ, अजितनाथ, संभवनाथ, अभिनन्दननाथ, सुमतिनाथ, शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, नमिनाथ, विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ, शांतिनाथ, कुन्थनाथ, अरहनाथ, मल्लिनाथ व महावीर भगवान के देह वर्ण स्वर्ण के सदृश पीले वर्ण के थे।विशेषतः रंग चित्रोपयोगी हैं। वर्णों की योजना अधिकांशतः चित्रों में की जाती है, मूर्तिशास्त्र में रंग का उपयोग अति अल्प मात्रा में ही हो पाता है। वर्ण के अनुसार मूर्तियों बनाने का उल्लेख शास्त्रों में मिलता है।[18]चन्देरी, मध्यप्रदेश के जैन मंदिरों की चौबीसी प्रतिमाएं तीर्थंकरों के वर्णों के अनुसार निर्मित करवाकर प्रतिष्ठित की गयी हैं।[19] उसी प्रकार राजस्थान स्थित श्री महावीर जी, बिहार स्थित चम्पापुरी में चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमाएं उनके वर्णों के अनुसार निर्मित करवाकर प्रतिष्ठित की गई अन्य स्थानों पर भी इस प्रकार के उदाहरण हमें देखने को मिलते है।

उत्तर भारत में राजस्थान–मकराणा में श्वेत और गुलाबी रंग का संगमरमर मिलता है। जैसलमेर, सौराष्ट्र और कच्छ के कई भागों में पीत वर्ण (सुवर्ण वर्ण) का संगमरमर प्राप्त होता है। मेवाड़, केसरियाजी में श्वेत वर्ण का पाषाण मिलता है। जयपुर के पास श्यामवर्ण का भेशलाना का पाषाण मिलता है। डूंगरपुर में श्याम रंग के बजाय कबूतर के रंग जैसा पाषाण मिलता है, उस पाषाण को ''पारेवा'' नाम दिया गया है। दक्षिण में ग्रेनाईट पाषाण मिलता है उसमें से श्याम वर्ण की मूर्ति बनाई जाती है।शास्त्रों में वर्णित रंग के अनुरूप मूर्तियां बनने के इच्छुक श्रावकजन अन्य प्रदेशों से अपनी आवश्यकतानुसार उसी वर्ण का पाषाण बड़ी कठिनाइयों से प्राप्त कर प्रतिमायें निर्मित करवाते है।[20]

षट् लेश्या वर्ण– जैन दर्शन में जीव के भावों का महत्वपूर्ण स्थान है। जैनदर्शन में भावों को रंगों के माध्यम से भी अभिव्यक्त किया गया है। जैनागम में योग प्रवृत्ति और कषाय के संयोग को 'लेश्या' शब्द से अभिहित किया है। शुभ योग तथा मंद कषाय से शुभ रूप पुण्य प्रकृतियों का तथा अशुभ तीव्र कषाय से पाप रूप अशुभ प्रकृतियों का आस्रव तथा बंध होता है। जिसके द्वारा आत्मा पुण्य व पाप से लिप्त होती है। 'लेश्या' के स्वरूप को समझाने के लिए आगम में 'लेश्या' को छः भेदों में विभाजित किया है। तीव्रतम, तीव्रतर, तीव्र, मन्द, मन्दतर, मन्दतम। इनमें से तीन शुभ व तीन अशुभ होते हैं। साथ ही कलापूर्ण बनाने के लिए छः रंगों से इन्हें उपमित भी किया है, क्योंकि जीव के प्रतिक्षण के भाव इन कषायों से रंगे हुए होने के कारण चित्र विचित्र दिखाई देते है।[21]

तीव्रतम भाव की उपमा कृष्ण भ्रमर के सदृश काले वर्ण की कृष्ण लेश्या से, तीव्रतर भाव की उपमा नील मणि के सदृश नील लेश्या से, और तीव्रतम भाव की उपमा कपोत के सदृश कापोत लेश्या से है। इसी प्रकार मन्द भाव की उपमा सुवर्ण के सदृश पीत वर्ण की पीतलेश्या से, मन्दतर भाव की पदम या कमल के सदृश हल्के गुलाबी रंग की पद्म लेश्या से और मन्दतम् भाव की उपमा शुक्ल शंख के सदृश शुक्ल लेश्या से है।षट् लेश्या वर्ण की प्रतीकात्मकता को विभिन्न लक्षणों भावों से युक्त मनुष्यों से समझा जा सकता है।

1. कृष्णलेश्या :– कृष्ण लेश्या काले रंग की तीव्रतम लेश्या है। कृष्ण लेश्या से युक्त व्यक्ति धर्म व दया से रहित, तीव्र क्रोध करने वाला, द्वेषरूपी ग्रह से घिरा हुआ दुराग्रही व कला चातुर्य से रहित होता है। अतः असंतोष हिंसा आदि परम तामसभाव कृष्ण लेश्या के लक्षण जैनागम में उल्लेख मिलता है कि कृष्ण लेश्या से युक्त जीव धूमप्रभा पृथिवी से अंतिम पृथिवी तक जन्म लेता है। अथवा सातवें नरक तक जाता है।

2. नीललेश्या :– नीले रंग की तीव्रतर भाव की नीललेश्या से युक्त जीव विषयों में आसक्त, मतिहीन, प्रचुर माया प्रपंच में संलग्न, धन धान्य के संग्रहादि में तीव्र लालसा वाला कायर, लोभ से अन्ध, दूसरों को ढंगने में दक्ष, कला चातुर्य रहित, निद्राशील, पर वचन में दक्ष होता है। आहारादि संज्ञाओं में आसक्त ऐसा जीव नीललेश्या के साथ धूप प्रभा तक जाता है। अर्थात पांचवें नरक तक जाता है।[22]

3. कापोत लेश्या :– स्लेटी रंग की तीव्र कापोत लेश्या से युक्त जीव दूसरों के ऊपर रोष करने वाला, निन्दा करने वाला, ईर्ष्या करने वाला, नाना प्रकार से अपनी प्रशंसा करता है। स्तुति किये जाने पर अति संतुष्ट अहंकार रूपी ग्रह से घिरा हुआ, अपनी

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

हानि ओर वृद्धि को न जानता हो, रण में मरण का इच्छुक कर्तव्य–अकर्तव्य की गणना न करने वाला होता है। कापोत लेश्या का जीव तीसरे नरक तक जाता है।

कृष्णलेश्या, नीललेश्या व कापोत लेश्यायें अप्रशस्त है, अशुभ हैं। इनका फल निष्कृष्ट है। ये संसार परिभ्रमण की कारण और नरक तिर्यन्च गति की मूल हैं।

4. पीत लेश्या :– पीले रंग की मंद भाव व्यक्ति अपने कर्तव्य और अकर्तव्य को जानता है। समदर्शी होता है। दया व दान में रत हो, मृदु स्वभावी और ज्ञानी होता है। सत्कार्यों में तत्पर, उदार चित्त वाला सद्गुणी जीव पीत लेश्या को दर्शाता है। पीतलेश्या से युक्त जीव सौधर्म ईशान स्वर्ग जाता है।[23]

5. पद्म लेश्या :– पद्म लेश्या का जीव त्यागी, उत्तम कार्य करने वाला, क्षमावान, सच्चा साधू जनो, गुरूजनों के गुणों के पूजन में निरत पूजा में प्रीतियुक्त, न्याय पथिक, प्रिय वचन वक्ता, शुभ चिंतवन करने वाला, विनयवान्, दान देने में तत्पर रहता है। पद्मलेश्या का जीव बारहवें स्वर्ग में जाता है।

6. शुक्ल लेश्या :– जो जीव निदान रहित, पक्षपात रहित, राग और द्वेष से परान्मुख, सब जीवों में समदर्शी हो वह शुक्ल लेश्या को प्रतिबिम्बित करता है। अतः वीतरागता शत्रु के भी दोषों पर दृष्टि न देना, पाप कार्यों से उदासीनता निन्दा रहित आदि शुक्ल लेश्या के लक्षण हैं।[24] शुक्ल लेश्या का जीव सर्वाथ सिद्धि को ही जाता है।

पीत लेश्या, पद्म लेश्या, व शुक्ल लेश्यायें प्रशस्त है, शुभ है इनका फल उत्तम है। ये तीनों लेश्यायें सर्वमोक्ष सुख की मूलक है।अतः जीव की तृष्णाओं, इच्छाओं व काषायों को कृष्ण नील, कापोत, पीत, पद्म व शुक्ल वर्ण की लेश्याओं द्वारा दर्शाया जाता है। षट् लेश्याओं से मनुष्य की सर्व ही कषायों की तीव्रता व मन्दता का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। कषायों की शक्ति दर्शाने के लिए षट्लेश्या वृक्ष का कलापूर्ण चित्रण हमें जैन मंदिरों में देखने को मिलता है। जिसमें मनुष्य के मानसिक विकास की विभिन्न मनोदशाओं को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया है।

जब हम जैन धर्म में उपलब्ध रंगों के विविध संदर्भों का अध्ययन व अवलोकन करते है, तब हमें इन रंगों में आत्मोपलब्धि की अनन्त संभावनाओं के दर्शन होने लगते है। रंगों का अपना विशिष्ट एवं व्यापक धरातल है, जिससे कोई भी धर्म, कला अछूती नहीं रह सकी है।जैन शैली के चित्र में भी रंग योजना की दृष्टि से लाल, पीले, नीले, श्वेत व काले रंगों को ही समावेशित किया गया है। पृष्ठभूमि में अधिकाशंतः लाल रंग का प्रयोग किया गया है। ताड़ पत्रों पर अंकित जैन चित्र प्रायः पीले रंग के है। चित्रों पर धार्मिक प्रभाव की ही प्रमुखता है। अतः रंग शक्ति के प्रतीक बनकर आत्मोपलब्धि की दिशा में प्रवृत्त कर सकते है। रंगों का अपना मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है, जिसका लौकिक और पारलौकिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1 जैन रवीन्द्र कुमार– महामंत्र णमोकार एक वैज्ञानिक अन्वेषण, प्रकाशन–केलादेवी सुमति प्रसाद ट्रस्ट नई दिल्ली वर्ष 1993
2 जैन नेमीचन्द – बहुआयामी महामंत्र णमोकार प्रकाशन–हीरा भैया प्रकाशन इन्दौर वर्ष 1993
3 जैन नाथूलाल शास्त्री– प्रतिष्ठा प्रदीप प्रकाशन–वीर निर्माण ग्रंथ समिति इन्दौर वर्ष 1990
4 जैन ब्र. भरत – जैनत्व की गौरव गाथा भाग–2 प्रकाशन–धर्मोदय साहित्य प्रकाशन सागर वर्ष 2013
5 तिलोयपणाती भाग– 3 गाथा 595–596 अनु. आर्यिका विशुद्धमति प्रकाशन–भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा कोटा वर्ष 1986
6 सोमपुरा ओ. प्रभाशंकर– भारतीय शिल्प संहिता प्रकाशन–सोमैया पब्लिकेशन प्रा. लि. नई दिल्ली वर्ष 1975
7 जैन बाल चन्द्र– जैन प्रतिमा विज्ञान प्रकाशन– मदन महल जबलपुर
8 जिनेन्द्र वर्णी – शांतिपथ प्रदर्शन प्रकाशन–जितेन्द्र वर्णी ग्रन्थ माला पानीपत वर्ष 2013
9 जिनेन्द्र वर्णी– जैनेन्द्र सिद्धांत कोष भाग–3 प्रकाशन–भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली वर्ष 1987